

अनुक्रमणिका

श्लोकों की संख्या	नाम श्लोक	पृष्ठ
३३	देव देवी वैक्रिय करने बाबत श्री अग्निभूतिजी वायु-भूतिजी की पृच्छा का श्लोक	१
३४	चमरेन्द्रजी के उत्पात का श्लोक	६
३५	अवधिज्ञान की विचित्रता आदि का श्लोक	१६
३६	अणुगार वैक्रिय का श्लोक	१६
३७	ग्रामादि विकुर्वणा का श्लोक	२०
३८	शक्रेन्द्रजी और ईशानेन्द्रजी के चार चार लोकपालों तथा आठ राजधानियों का श्लोक	२३
३९	अधिपति देवों का श्लोक	२६
४०	देवता देवी की परिषद् परिवार स्थिति का श्लोक	२७
४१	कम्पमान का श्लोक	३२
४२	सप्रदेशी अप्रदेशी का श्लोक	४०
४३	वर्द्धमान हायमान अवद्विया का श्लोक	४४
४४	सोवचय सावचय का श्लोक	४६
४५	राजगृह नगर आदि का श्लोक	४८
४६	वेदना निर्जरा का श्लोक	५१
४७	कर्म बन्ध का श्लोक	५४
४८	पचास बोलों की बन्धी का श्लोक	५८
४९	कालादेश का श्लोक	६३
५०	पञ्चवराण का श्लोक	७३
५१	तमस्काय का श्लोक	७४
५२	कृष्णराजि और लोकान्तिक देवों का श्लोक	७६
५३	मारणान्तिक समुद्रघात करके मरने उपजने का श्लोक	८३

- ५४ काल विशेषणका थोकड़ा
 ५५ पृथ्वी आदि का थोकड़ा
 ५६ आयुष्य बन्ध का थोकड़ा
 ५७ सुख दुःखादिका थोकड़ा
 ५८ आहार का थोकड़ा
 ५९ सुपञ्चक्खाण दुप्पञ्चक्खाण का थोकड़ा
 ६० वनस्पति के आहारादि का थोकड़ा
 ६१ जीव का थोकड़ा
 ६२ खेचर तिर्यच पंचेन्द्रिय की योनि मंग्रह का थोकड़ा
 ६३ आयुष्य बन्ध आदि का थोकड़ा
 ६४ कामभोगादि का थोकड़ा
 ६५ अतगार क्रिया का थोकड़ा
 ६६ छद्मस्थ अवधिज्ञानी का थोकड़ा
 ६७ असंबुद्ध अणुगार का थोकड़ा
 ६८ अन्य तीर्थी का थोकड़ा

